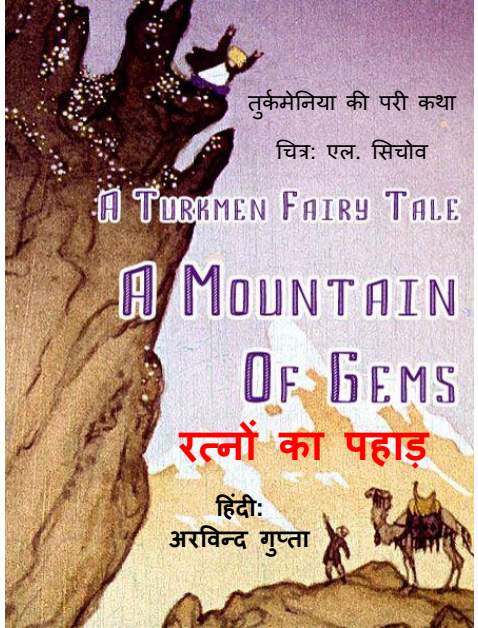
तुर्कमेनिया की परी कथा
चित्र: एल. सिचोव
A Turkmen Fairy Tale
A Mountain Of Gems
रत्नों का पहाड़
हिंदी:
अरविन्द गुप्ता

किसी गाँव में एक बूढ़ी विधवा रहती थी जिसका मिराली नाम का एक बेटा था. माँ-बेटे बहुत गरीब थे. बूढ़ी औरत ऊन की सफाई और कपड़े धोने का काम करती थी और किसी तरह अपना और अपने बेटे का पेट भरती थी.

जब मिराली बड़ा हुआ तो उसकी माँ ने उससे कहा:

"मेरे बेटे, मुझमें अब और काम करने की ताकत नहीं बची है. अब तुम्हें अपने लिए कोई काम ढूंढ़ना होगा जिससे किसी तरह हमारा गुजारा चल सके."

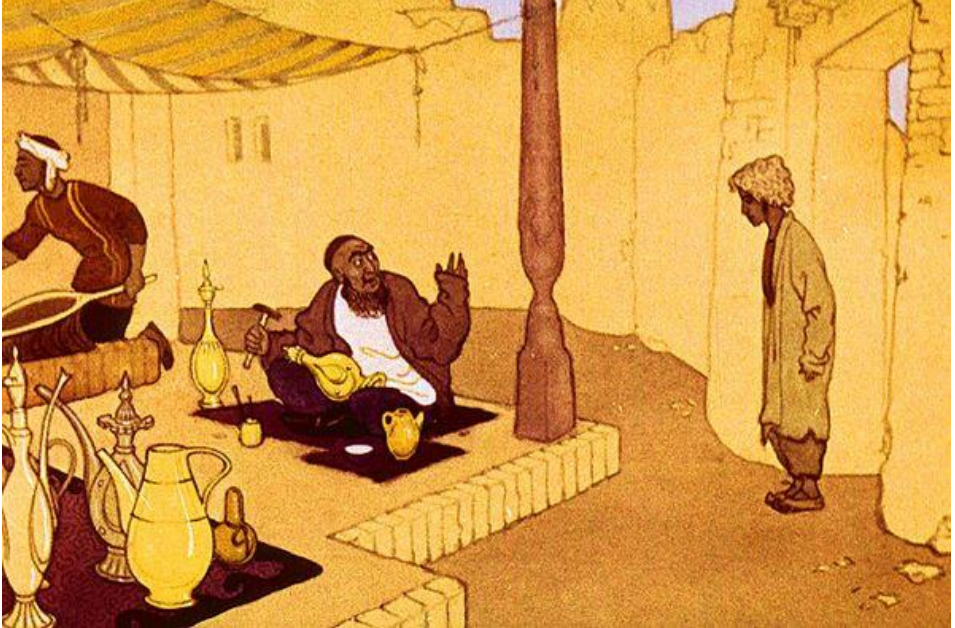

"बहुत अच्छा," मिराली ने कहा, और वह काम की तलाश में निकल पड़ा. वह यहां गया, वह वहां गया, लेकिन उसे कहीं भी कोई काम नहीं मिला.

कुछ समय के बाद वह एक बाई (पुराने तुर्कमेनिया में एक अमीर) के घर पहुंचा.

"क्या आपको काम करने वाले एक लड़के की ज़रूरत है, बाई" मिराली ने पूछा.

"हां, मुझे जरूरत है," बाई ने उत्तर दिया.

और उसने तुरंत मिराली को काम पर रख लिया.

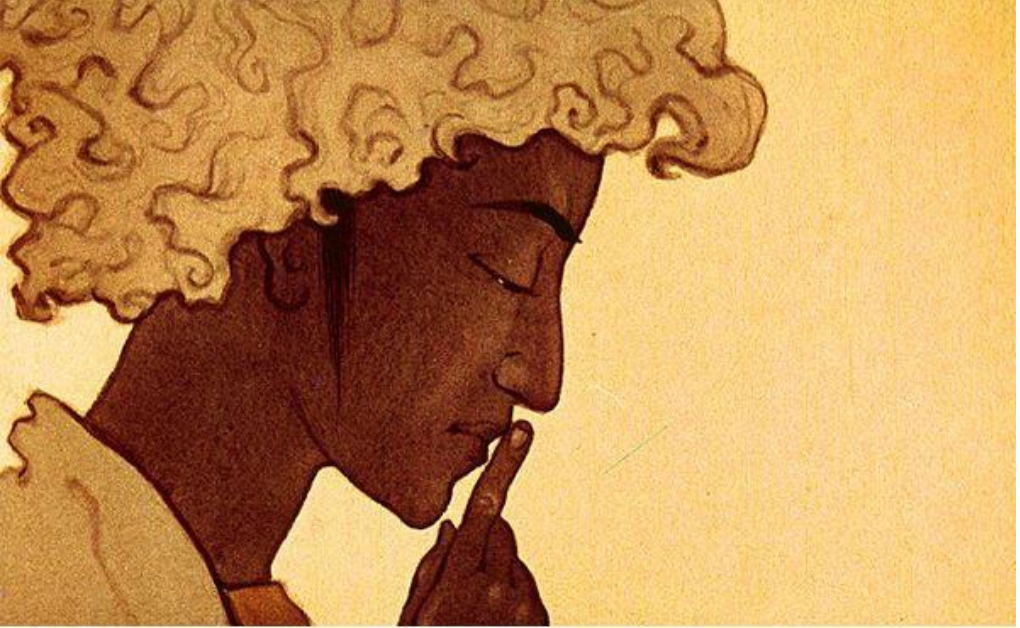

एक दिन बीत गया, लेकिन बाई ने अपने नए काम करने वाले से कुछ भी करने को नहीं कहा. फिर एक और दिन बीत गया, और बाई ने उसे किसी भी प्रकार का कोई आदेश नहीं दिया. तीसरा दिन भी बीत गया, और बाई ने उसे कोई काम नहीं दिया.

मिराली को यह सब बहुत अजीब लगा और वह सोचने लगा कि बाई ने उसे आखिर काम पर क्यों रखा था.

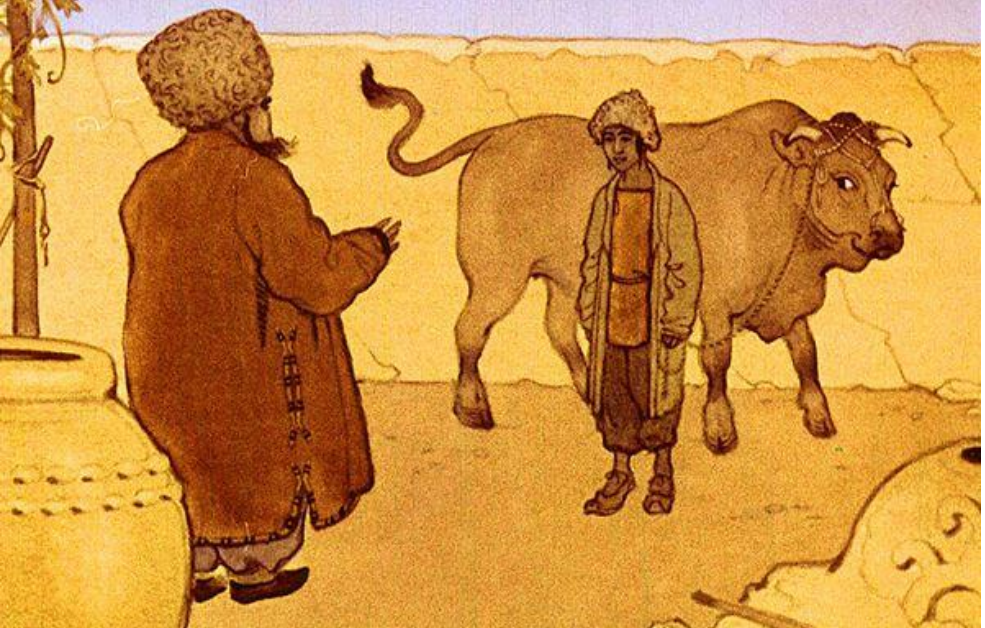

फिर मिराली, बाई के पास गया और उसने पूछा:

"क्या मेरे लिए कोई काम नहीं है, मालिक?"

"हाँ, हाँ," बाई ने उत्तर दिया, "मैं कल यात्रा पर जा रहा हूं, और तुम मेरे साथ चलोगे."

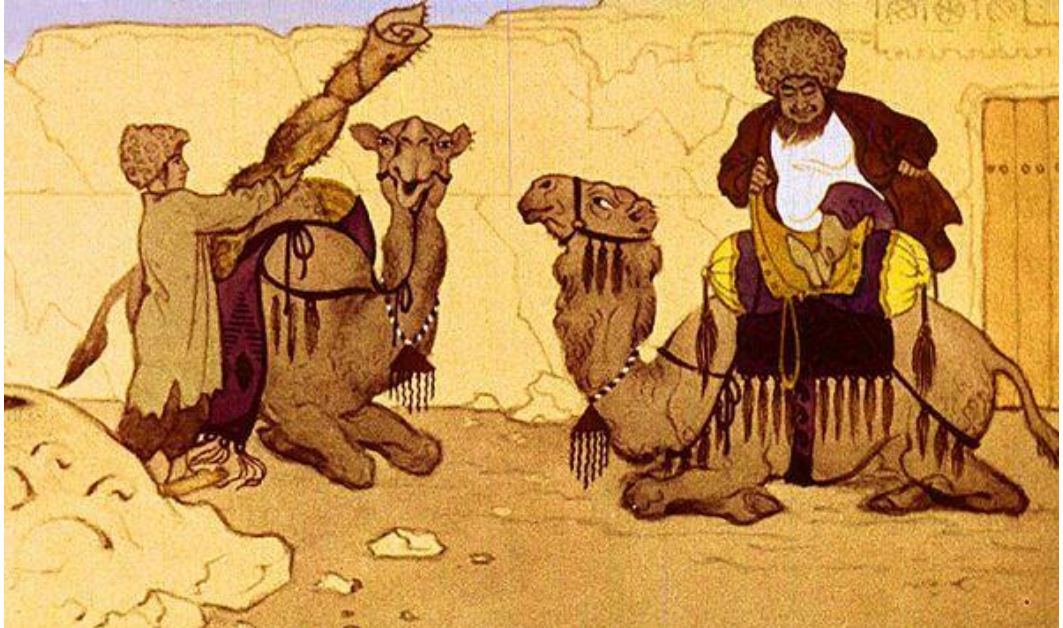

अगले दिन बाई ने मिराली को एक बैल मारने और उसकी खाल उतारने का आदेश दिया, और, ऐसा करने के बाद उसे चार बड़े बोरे लाने और यात्रा के लिए दो ऊंट तैयार करने का आदेश दिया.

एक ऊँट पर बैल की खाल और
बोरियाँ लाद दी गईं, दूसरे ऊँट पर बाई
चढ़ा और वे अपने रास्ते चल पड़े.

वे एक दूर पहाड़ की तलहटी में पहुँच गए, और वहां पर बाई ने ऊँटों को रोका और मिराली को बोरियाँ और बैल की खाल उतारने का आदेश दिया.

मिराली ने वैसा ही किया, और फिर बाई ने उससे कहा कि वह बैल की खाल को उल्टा कर दे और उस पर लेट जाए. मिराली को इसका कारण समझ में नहीं आया, लेकिन उसका मना करने का साहस भी नहीं हुआ और जैसा उसके मालिक ने उससे कहा, उसने वैसा ही किया.

बाई ने मिराली सहित खाल को
एक बंडल में लपेटा, उसे रस्सी से
कसकर बांध दिया और खुद जाकर
एक चट्टान के पीछे छिप गया.

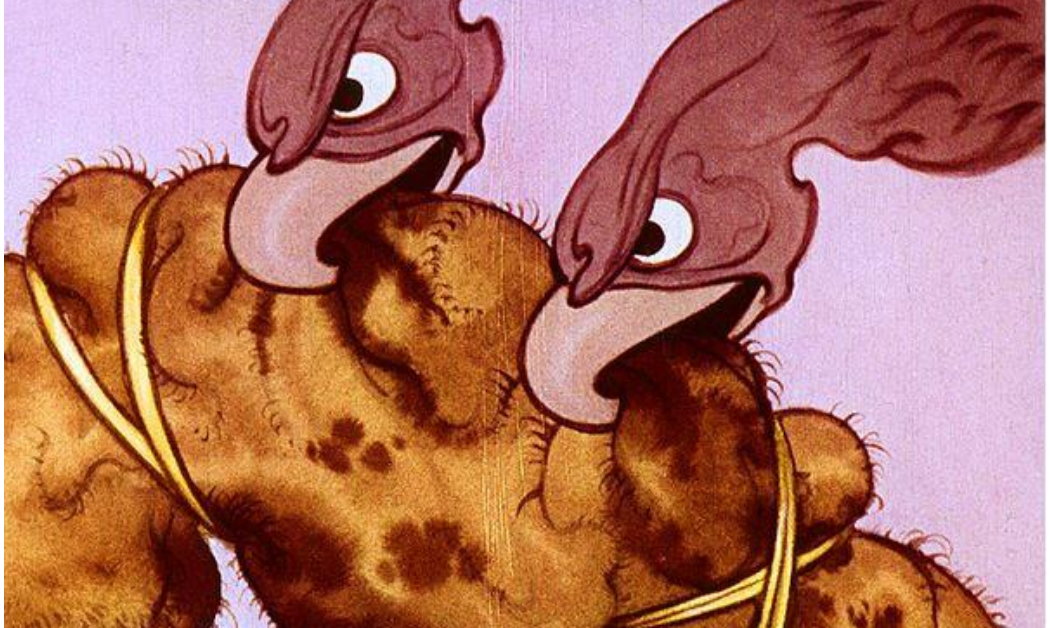

कुछ देर बाद दो बड़े शिकारी पक्षी उड़ते हुए आए, उन्होंने उस खाल को अपनी चोंचों में पकड़ लिया, जिसके चारों ओर मांस की ताज़ा गंध थी और उसे अपने साथ एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर ले गए.

पक्षियों ने खाल पर चोंचें
मारना और पंजे मारना शुरू कर
दिए लेकिन मिराली को अंदर
देखकर वे डर गए और उड़ गए.

मिराली अपने पैरों पर खड़ा हो गया और अपने चारों ओर देखने लगा.

बाई ने उसे नीचे से देखा और वो चिल्लाया:

"तुम वहाँ किस लिए खड़े हो? मेरे पास वो रंग-बिरंगे पत्थर फेंक दो जो तुम्हारे पैरों के आसपास बिखरे पड़े हैं!"

मिराली ने नीचे ज़मीन की ओर देखा. उसने देखा कि बड़ी संख्या में कीमती पत्थर, हीरे और माणिक, नीलमणि और पन्ने वहां जमीन पर बिखरे पड़े थे. रत्न बेहद सुंदर थे और वे धूप में चमक रहे थे.

मिराली ने रत्नों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया और उन्हें बाई के पास फेंकना शुरू कर दिया, बाई उन्हें गिरते ही तेजी से उठाता था और उन्हें बोरों में भर देता था.

मिराली काफी देर तक काम करता रहा. फिर उसके मन में एक विचार आया जिसने उसका खून ठंडा कर दिया.

"मैं यहां से नीचे कैसे उतरूंगा, मालिक?" उसने बाई से पूछा.

"कुछ और कीमती पत्थर फेंको," बाई ने कहा. "फिर मैं तुम्हें बताऊंगा कि पहाड़ से नीचे कैसे उतरना है."

मिराली ने उस पर विश्वास किया और रत्न नीचे फेंकता रहा.

जब बोरियाँ भर गईं, तो बाई ने उन्हें ऊँटों की पीठ पर लाद दिया.

"मेरा काम खत्म हो गया, मेरे बेटे!" बाई ने हँसते हुए मिराली से कहा. "अब तुम देख सकते हो कि मैं अपने नौकरों को किस तरह का काम देता हूँ. देखो उनमें से कितने वहाँ, पहाड़ पर मरे पड़े हैं!"

और इन शब्दों के साथ बाई चला गया.

मिराली पहाड़ की चोटी पर बिल्कुल अकेला रह गया था. वह नीचे चढ़ने का रास्ता ढूंढने लगा, लेकिन पहाड़ बहुत ऊंचा था, चारों तरफ चट्टानें थीं और उसे कोई रास्ता नहीं मिला. वहां पर लोगों की हड्डियाँ हर जगह बिखरी पड़ी थीं. वो उन लोगों की हड्डियाँ थीं, जो मिराली की तरह कभी बाई के नौकर थे.

वो देखकर मिराली भय से कांपने लगा.

अचानक उसके ऊपर पंख फड़फड़ाने लगे, और इससे पहले कि वह मुड़ पाता, एक विशाल चील उस पर झपट पड़ी.

चील, मिराली को टुकड़े-टुकड़े करने ही वाली थी,
लेकिन मिराली ने अपनी सूझबूझ नहीं खोई और उसने
अपने दोनों हाथों से चील के पैरों को कसकर पकड़ लिया.
चील ने चीख निकाली, वो हवा में उठी और मिराली को
झटकने की कोशिश करते हुए इधर-उधर उड़ने लगी.

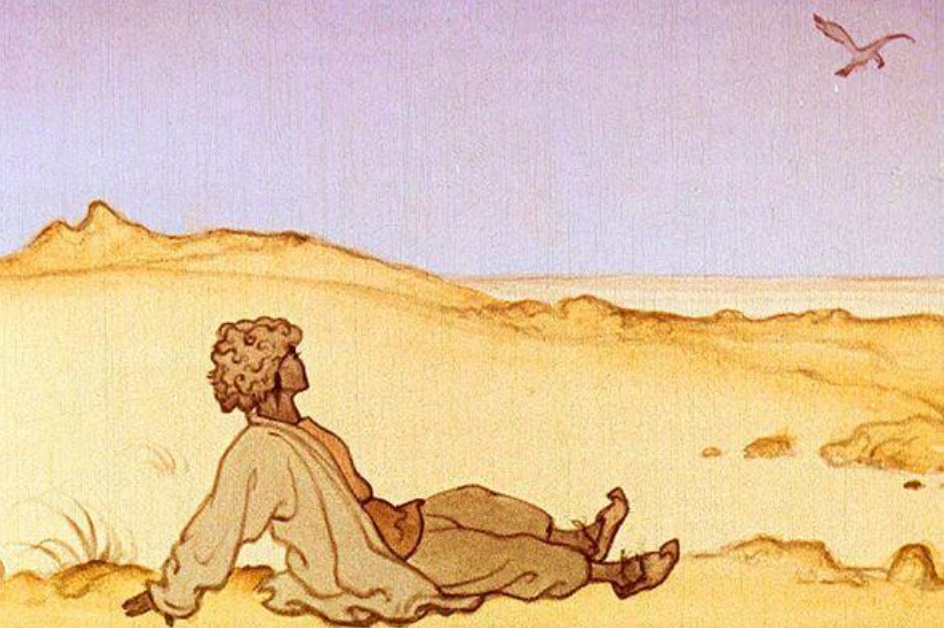

अंत में, थककर, चील ने पहाड़ की
चोटी से काफी नीचे जमीन पर मिराली
को गिरा दिया, और जब मिराली ने उसकी
पकड़ ढीली की, तो फिर चील उड़ गई.

इस प्रकार मिराली एक भयानक मौत से बच गया. वह पहाड़ की तलहटी में पहुँच गया और बाज़ार में जाकर फिर से काम की तलाश करने लगा. अचानक उसने अपने पूर्व मालिक बाई को अपनी ओर आते हुए देखा.

"क्या आपको एक काम करने वाले लड़के की ज़रूरत है, बाई?" मिराली ने उससे पूछा.

अब, बाई के दिमाग में यह बात नहीं आई कि उसका कोई भी नौकर, जिसे एक बार पहाड़ की चोटी पर छोड़ दिया गया था, जीवित रह सकता था - ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था. इसलिए, मिराली को न पहचानते हुए, बाई ने उसे फिर से काम पर रख लिया और अपने साथ उसे घर ले गया.

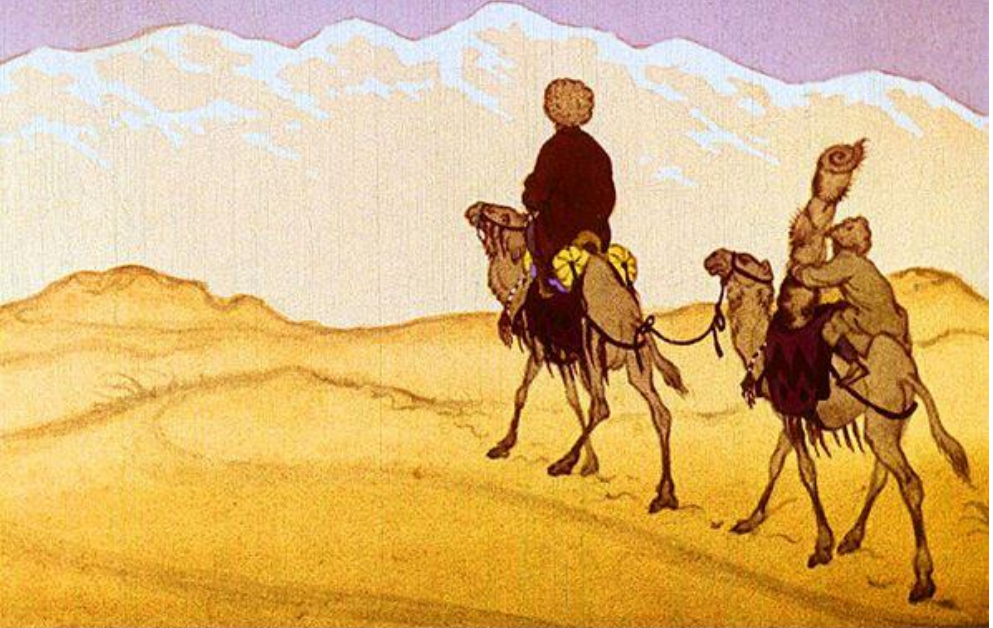

उसके तुरंत बाद, बाई ने मिरालो को एक बैल का वध करने और उसकी खाल उतारने का आदेश दिया, और ऐसा करने के बाद, उससे दो ऊंट तैयार करने और चार बोरे लाने को कहा.

वे उसी पहाड़ की तलहटी में गए, और, पहले की तरह, बाई ने मिराली को बैल की खाल पर लेटने और खुद को उसमें लपेटने के लिए कहा.

"मालिक, कृपा मुझे दिखाएं कि वह
कैसे किया जाता है, क्योंकि मुझे वो
बिल्कुल स्पष्ट नहीं है," मिराली ने कहा.

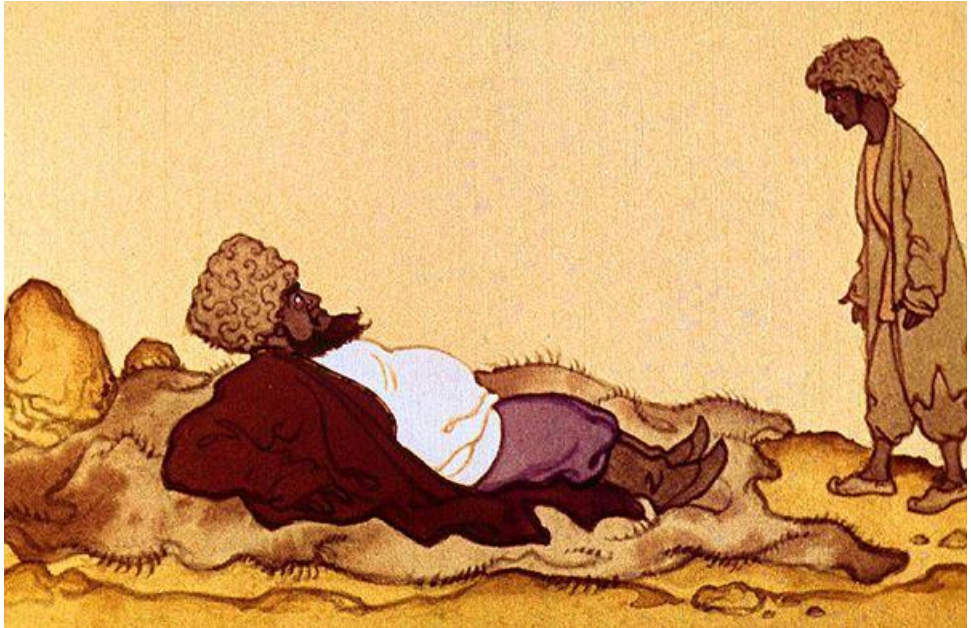

“इसमें समझाने लायक क्या है? देखो
उसे इस तरह से किया जाता है," बाई ने
जवाब दिया, और वो खुद खाल पर लेट गया
जो अंदर से बाहर की ओर उल्टी हुई थी.

मिराली ने तुरंत खाल को, और
उसके अंदर बाई को, एक बंडल में लपेटा
और उसे कसकर रस्सी से बांध दिया.

"यह तुमने मेरे साथ क्या किया, मेरे बेटे!" बाई रो पड़ा.

उसी क्षण दो शिकारी पक्षी उड़ते हुए आए, उन्होंने बैल की खाल को बाई सहित उठा लिया और उसे लेकर पहाड़ की चोटी पर उड़ गए.

वहां पहुंचकर उन्होंने उसे अपनी चोंचों और पंजों से फाड़ना शुरू कर दिया, लेकिन बाई को देखकर वे डर गए और उड़ गए. बाई अपने पैरों पर खड़ा हो गया.

"आओ बाई, समय बर्बाद मत करो, मेरे लिए नीचे रत्न फेंको, जैसे मैंने तुम्हारे साथ किए थे," मिराली ने नीचे से पुकारा.

तभी बाई ने अपने पुराने नौकर को पहचान लिया और वो डर और गुस्से से कांपने लगा.

"तुम पहाड़ से नीचे कैसे उतरे?" बाई ने मिराली से पूछा.

"तुम नीचे और अधिक रत्न फेंकते रहो, और जब मेरे पास पर्याप्त रत्न हों जाएंगे, तो फिर मैं तुम्हें नीचे उतारने का रास्ता भी बताऊँगा!" मिराली ने जवाब दिया.

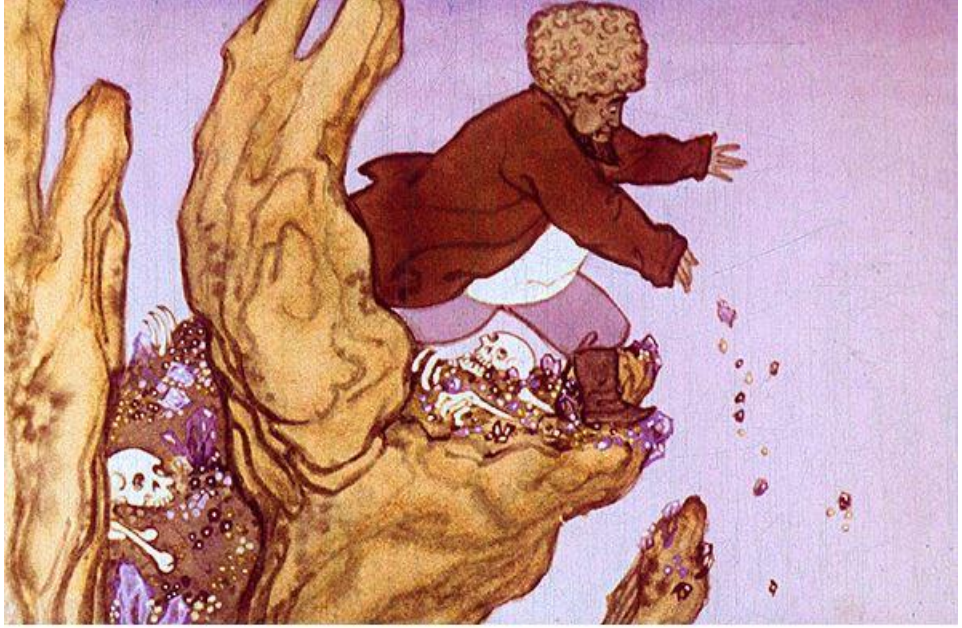

बाई ने रत्नों को नीचे फेंकना शुरू कर दिया. मिराली उन्हें गिरते ही तेजी से उठाता था. जब चारों बोरियाँ भर गईं, तो उसने उन्हें ऊँटों की पीठ पर लाद दिया.

"जरा बाई अपने चारों ओर देखो," मिराली ने कहा. "तुम्हारे नौकरों की हड्डियाँ वहां पर हर जगह बिखरी पड़ी हैं. तुम उनसे क्यों नहीं पूछते कि पहाड़ से नीचे कैसे उतरना है? जहाँ तक मेरी बात है, मैं अब घर जा रहा हूँ."

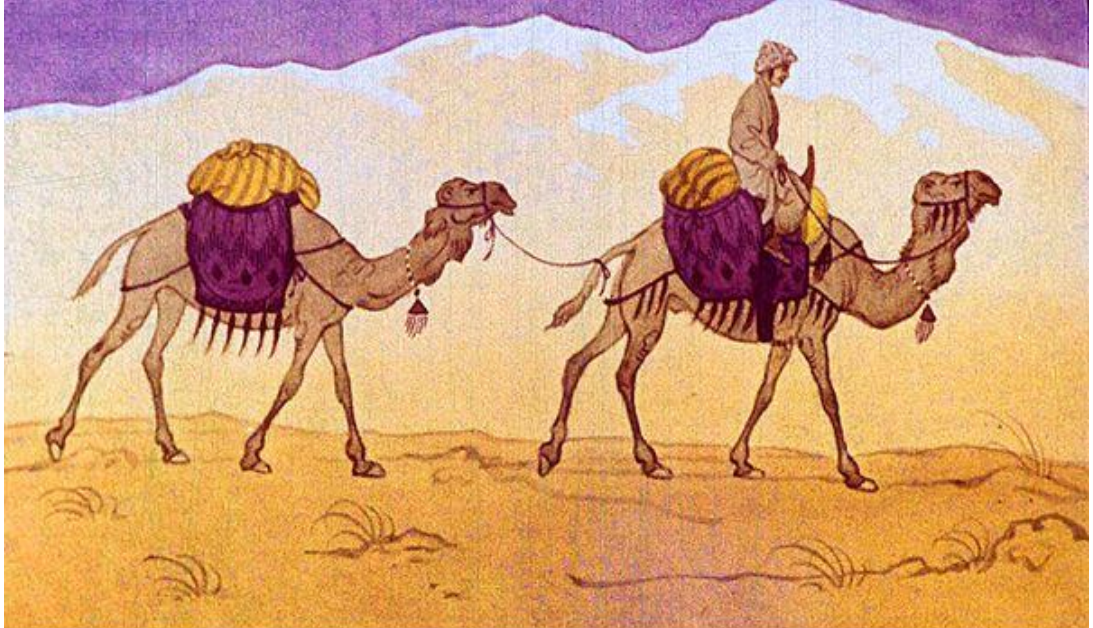

और फिर ऊँटों को घुमाकर मिराली
अपनी माँ के घर के लिए चल पड़ा.

बाई पहाड़ की चोटी पर इधर-उधर दौड़ता रहा, धमकियां देता रहा और मिन्नतें करता रहा, लेकिन सब व्यर्थ गया, क्योंकि वहां उसकी बात सुनने वाला कोई भी नहीं था!